✻ प्रेरणा स्तंभ ✻

प्रज्ञावंत श्री.नंदकुमार बेंडाळे,
अध्यक्ष, के.सी.ई.सोसायटी, जलगांव
और के.सी.ई.सोसायटी के सभी व्यवस्थापन के संचालक गण

✻ मुख्य संयोजक ✻

प्राचार्य डॉ.संजय भारंबे
प्रधानाचार्य

✻ संयोजक ✻

प्रा.विजय लोहार — हिंदी विभाग
डॉ.विद्या पाटील — मराठी विभाग
डॉ.भूपेंद्र केसूर — संचालक, भाषा प्रशाला

✻ सह संयोजक ✻

डॉ.रोशनी पवार — विभागाध्यक्षा, हिंदी विभाग
डॉ.मनोज महाजन — हिंदी विभाग
डॉ.योगेश महाले — मराठी विभाग
डॉ.विलास धनवे — मराठी विभाग

✻ संयोजन समिति सदस्य ✻

डॉ.अनिल क्षिरसागर
डॉ.योगिनी राजपूत
डॉ.पंडीत चव्हाण
डॉ.भाग्यश्री भलवतकर
डॉ.अखिलेश शर्मा
डॉ.अतुल पाटील
प्रा.गोपीचंद धनगर
प्रा.रेणुका झांबरे
प्रा.उज्वला पाटील
प्रा.किर्ती सोनवणे
प्रा.सुनिता तडवी
प्रा.स्वप्नील चव्हाण
प्रा.वैभव भालेराव

स्थान : मूलजी जेठा महाविद्यालय (स्वायत्त), जलगांव
तिथि : ०५ मार्च २०२४

पंजीकरण, आवास एवं शोधलेख संबंधी सूचनाएँ

१. संगोष्ठी में सहभाग के लिए पंजीकरण अनिवार्य है। पंजीकरण की अंतिम तिथि- २९/०२/२०२४ होगी ।
२. पंजीकरण हेतु लिंक पर क्लिक करें - **https://forms.gle/g64izX1pc2dYj766**
३. ध्यान दे, प्रतिभागी को अपनी आवागमन और आवास व्यवस्था स्वयं करनी होगी ।
४. संगोष्ठी में प्राप्त होने वाले अनुसंधान एवं प्रकाशन विषयक नियमों से युक्त चयनित स्तरीय-मौलिक शोध-पत्रों का प्रकाशन **Single Blind Peer-Reviewed Refereed International Research Journal (With ISSN)** शोध पत्रिका में किया जाएगा ।
५. शोधलेख की शब्द सीमा २००० से लेकर ३००० शब्दों तक हैं।
६. जिन प्रतिभागियों को अपने शोधपत्र प्रकाशित करवाने हैं, उन्हें - रू.५००/- शोधपत्र प्रकाशन शुल्क अदा करना होगा। ऐसे प्रतिभागी अपना शोधपत्र यूनिकोड फॉण्ट में टंकित करके वर्ड और पी.डी.एफ. के रूप में **hindi.mjc@gmail.com OR mjcmarathi0021@gmail.com** मेल पर २९/०२/२०२४ तक अनिवार्य रूप से प्रेषित कर दें।

संगोष्ठी शुल्क

रू. ६००/- प्राध्यापक
रू. ४००/- शोधार्थी छात्र
रू. ३००/- स्नातक या स्नातकोत्तर कक्षा के विद्यार्थी

बैंक खाता विवरण इस प्रकार है

खाता धारक का नाम - **Principal, M. J. College, Jalgaon**
खाता संख्या - **00701116000010**
बैंक का नाम - **The Jalgaon People Co-op Bank Ltd.**
शाखा का नाम - **M. J. College Campus, Jalgaon**
IFSC कोड़ - **JPCB0000007**

पंजीकरण शुल्क भुगतान करने के पश्चात **प्रा.विजय लोहार (हिंदी)** (9158082128) और **डॉ.योगेश महाले (मराठी)** (9175988647) के व्हाट्सएप नंबर पर स्क्रीन शॉट या भुगतान रसीद भेजने की कृपा करें

QR Code for Payment

बुक-पोस्ट

प्रति,
_____
_____
_____

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

और

खान्देश कॉलेज एज्युकेशन सोसायटी, जलगांव
द्वारा संचालित

मूलजी जेठा महाविद्यालय (स्वायत्त), जलगांव

हिंदी–मराठी विभाग (भाषा प्रशाला)
के संयुक्त तत्वावधान में
आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

'हिंदी-मराठी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना'

स्थान : मूलजी जेठा महाविद्यालय (स्वायत्त), जलगांव
तिथि : ०५ मार्च २०२४

✻ निमंत्रक ✻

डॉ.शीतला प्रसाद दुबे
कार्याध्यक्ष
महाराष्ट्र राज्य
हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

डॉ.पुरुषोत्तम पाटील
सदस्य
महाराष्ट्र राज्य
हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

डॉ. सं. ना. भारंबे
प्रधानाचार्य
मू.जे.महाविदयालय (स्वायत्त)

प्रा.विजय लोहार
संयोजक

डॉ.विद्या पाटील
संयोजिका

डॉ.भूपेन्द्र केसूर
संचालक, भाषा प्रशाला

संगोष्ठी की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अपने-आप में विश्व का व्यापक और अनोखा आंदोलन रहा है। जिसमें हिंदी ता भारत की अन्य भाषाओँ में लिखित साहित्य का योगदान भी विशिष्ट माना जाता है। एक पराधीन राष्ट्र के सम्मुख स्वतंत्रता प्राप्ति ही प्रमुख लक्ष्य रहता है, जिसे भिन्न-भिन्न स्तरों पर हासिल करने की जी-तोड़ मेहनत की जाती है । स्वाधीनता आन्दोलन के समय भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय भावना ता स्वाधीनता आंदोलन बड़े ही व्यापक स्वरूप में चित्रित हुआ हैं। हिंदी और मराठी भाषा के साहित्य में भी यह कोशिश अच्छी तरह से उजागर हुई हैं। इसका विशाल और उल्लेखनीय परिदृश्य रहा है।

हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती', माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा', सुभद्राकुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी', पन्त की कविता 'भारतमाता' तो मराठी साहित्य में वि.दा.सावरकर की 'ने मजसी ने परत मातृभूमीला । सागरा, प्राण तळमळला', साने गुरूजी की 'बल सागर भारत होवो,विश्वात शोभुनी राहो', कवि यशवंत की 'बंदीशाला', बा.भ.बोरकर की रचना 'हुतात्म्यांची जागृती', कुसुमाग्रज की 'क्रांतीचा जयजयकार' जैसी कुछ प्रातिनिधिक कविताओं में राष्ट्र प्रेम कुट-कुटकर भरा हुआ है, गद्य साहित्य में भी यह चेतना दृष्टिगोचर होती है । वास्तव में राष्ट्रीय चेतना के अनेक आयाम हिंदी और मराठी साहित्य में उद्घाटित हुए हैं, जिसकी चर्चा-परिचर्चा करनी आवश्यक है । इसके लिए प्रस्तुत विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का विचार किया गया है ।

अ. संगोष्ठी का मुख्य विषय : हिंदी और मराठी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

आ.संगोष्ठी के उप विषय

१. भारतीय नवजागरण और हिंदी साहित्य	१. भारतीय नवजागरण आणि मराठी साहित्य
२. राष्ट्र और राष्ट्रीयता की संकल्पना राष्ट्रीय चेतना	२. राष्ट्र व राष्ट्रीयत्वाची संकल्पना
३. भारतेंदुपूर्व कालीन हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	३. स्वातंत्र्यपूर्व काळातील राष्ट्रीय भावनेचे मराठी साहित्य
४. भारतेंदुकालीन साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	४. केशवसुतकालीन राष्ट्रीय भावनेचे मराठी साहित्य
५. द्विवेदीकालीन साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	५. विसाव्या शतकाच्या प्रारंभीच्या साहित्यातील राष्ट्रीय भावना
६. छायावादी युग के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	६. स्वातंत्र्य आंदोलन काळातील राष्ट्रीय जाणिवेचे मराठी साहित्य
७. राष्ट्रीय काव्यधारा : स्थितियां एवं परिणाम	७. म.गांधी यांच्या तत्वज्ञानाने प्रेरित मराठी साहित्य
८. राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि और उनका काव्य	८. राष्ट्रीय भावनेने प्रेरित लेखन करणारे मराठी कवी
९. हिंदी कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	९. मराठी कादंबरीमधून व्यक्त झालेली देश भावना
१०. हिंदी नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय भावना राष्ट्र चेतना	१०. मराठी नाटकातून प्रकट झालेल्या राष्ट्रीय जाणीवा
११. हिंदी लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	११. मराठी लोक साहित्यातून प्रकट झालेली राष्ट्र भावना
१२. स्वातंत्रोत्तर हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना	१२. स्वातंत्रोत्तर मराठी साहित्यातील राष्ट्र भावना
१३. भारतीय शिक्षण प्रणाली में देश भावना	१३. भारतीय शिक्षण प्रणालीमधील देश भावना

उक्त विषयों के अलावा भी कोई अन्य विषय जो राष्ट्रीय चेतना से जुड़ा हो, उसपर भी आलेख आमंत्रित हैं ।

जलगांव शहर

जलगांव शहर महाराष्ट्र के उत्तर संभाग का प्रमुख शहर है । यह मध्य रेल के मुंबई-भुसावल तथा पश्चिम रेल के सुरत-भुसावल मार्ग पर स्थित है। यहां से एशियन महामार्ग ५६ भी गुजरता है । अजंता-एरोला की विश्वविख्यात गुफाएं यहा से केवल ५५ की.मी. पर है । जलगांव में गांधी तीर्थ और अहिंसा तीर्थ जैसे पर्यटन स्थल भी मौजुद है ।

मूलजी जेठा महाविद्यालय (स्वायत्त)

खानदेश कॉलेज एज्युकेशन सोसायटी संचालित मूलजी जेठा (स्वायत्त) महाविद्यालय' महाराष्ट्र के खानदेश संभाग का सबसे बड़ा और पुराना महाविद्यालय है। इसकी स्थापना १९४५ में हुई थी । इस महाविद्यालय में शैक्षिक मूल्यों की बहुत लंबी परंपरा रही है। महाविद्यालय में कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं व्यवस्थापन इन संकायों में स्नातक, स्नातकोत्तर, पदविका ता आचार्य उपाधि तक की शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध हैं। महाविद्यालय में विज्ञान संकाय में लगभग १६ से अधिक विषय पढ़ाये जाते हैं। वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय में बी.कॉम., एम.कॉम, पदविका तथा अन्य वाणिज्यिक कक्षाओं तक अध्यापन होता है । उसी प्रकार कला संकाय में मराठी, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषाएँ स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर तक पढाई जाती है अन्य विषयों में राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, भूगोल, संरक्षण एवं सामरिकशास्त्र, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, योगशास्त्र, नाट्यशास्त्र, नृत्यशास्त्र, संगीत आदि विषयों के अध्यापन की समुचित व्यवस्था हैं । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अनेक परियोजनाओं और पदों को संचालित करने में महाविद्यालय सतत अग्रसर रहा है, जिसमें कॉलेज ऑफ़ पोटेंशियल', कॉलेज ऑफ़ एक्सलंस', स्टार कॉलेज' के स्टेटस ग्रहण किए हैं। मू.जे. महाविद्यालय का अपना स्वतंत्र रेडीओ मनभावन ९०.८ एफ.एम. समूह रेडीओ कार्यान्वित हैं। साल २०१७ से स्वायत्त महाविद्यालय के रूप में मू.जे. महाविद्यालय उत्कृष्टतम कार्य कर रहा है ।

हिंदी विभाग

मूलजी जेठा महाविद्यालय में हिंदी विभाग सन १९४५ से स्थापित हैं । यहाँ स्नातक ता स्नातकोत्तर की अनुदानित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध है । हिंदी विभाग को प्राध्यापक के रूप में हिंदी के महान व्यंग्य लेखक डॉ.शंकर पुणतांबेकर (चकल्लस पुरस्कार, सरस्वती पुरस्कार, वाग्धारा पुरस्कार ता महाराष्ट्र राज्य हिंदी पुरस्कार से सम्मानित), डॉ.ह.श्री.साने (बाद में पुणे के प्रतिष्ठित एस.पी.कॉलेज के प्रधानाचार्य बने), हिंदी सेवी एवं प्रचारक डॉ.रा.वा.पाटील, हिंदी भाषा विद् एवं साहित्यकार डॉ.तेजपाल चौधरी (खड़ीबोली के विद्वान्, भाषा वैज्ञानिक ता अनेक रचनाओं के रचयिता) लेखिका डॉ.वासंती सालवेकर, डॉ.मालती जावले, हिंदी समीक्षक और अनुवादक प्रा.अरुण पाटील इन्होंने सींचा और संवारा है । संप्रति डॉ.रोशनी पवार, प्रा.विजय लोहार और डॉ. मनोज महाजन विभाग की उन्नति हेतु कार्यतत्पर हैं । हिंदी विभाग में अबतक ०३ राष्ट्रीय संगोष्ठियों और १२ कार्यशालाओं का सफल आयोजन किया गया है ।हिंदी में नवीनतम प्रवाह और नवाचार पर आधारित कार्यशाला, नेट-सेट और राजभाषा अधिकारी परीक्षा पर आधारित कार्यशाला, सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी, रोजगार के नव माध्यम और हिंदी, तकनीकी और हिंदी आदि पर आधारित कार्यशालाएं, नव सृजन,.अनुवाद कार्य पर आधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी यह सब हिंदी विभाग की उपलब्धियां रही है ।

मराठी विभाग

मूलजी जेठा महाविद्यालय में मराठी विभाग सन १९४५ से स्थापित हैं । यहाँ स्नातक ता स्नातकोत्तर की अनुदानित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध है। मराठी साहित्य के विख्यात समीक्षक प्रा.म.ना.अदवंत, संत साहित्य के विद्वान् प्रा.सु.का.जोशी, मराठी के जाने माने कवि और गज़लकार प्रा.राजा महाजन, लोक साहित्य ता काव्य समीक्षा क्षेत्र के विद्वान् डॉ.किसन पाटील आदि मराठी विद्वान् अध्यापकों के द्वारा यह विभाग पल्लवित और पोषित हुआ है । वर्तमान समय में लोकसाहित्य की विद्वान डॉ.विद्या पाटील, मराठी के नव लेखक डॉ. योगेश महाले और डॉ.विलास धनवे के द्वारा मराठी विभाग विकास पथ पर अग्रसर है । विभाग में बड़ी-बड़ी कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया हैं । अनुसन्धान के क्षेत्र में भी इस विभाग में अच्छी परंपरा रही है। भांति-भांति की साहित्यिक गतिविधियों के कारण विश्वविद्यालय परिक्षेत्र में इस मराठी विभाग की अलग और विशिष्ट पहचान है ।